SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/

# मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व की आधुनिक शिक्षा जगत में प्रासंगिकता

**प्रो० छत्रसाल सिंह**
प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

**सारांश**

*हमारे लोकगीत में, लोक संगीत में, लोक जीवन में, हमारे कार्यों में, रहन-सहन में, सबमें राम समाहित है। कोई बच्चा जन्म ले तो छट्ठी के दिन रामायण कराते है। किसी की मृत्यु हो जाए तो भी रामायण कराते है। अर्थात राम हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति से जुड़े हुये है। कहा जाता है कि यहाँ जो कुछ भी मिला है वह राम का है। जो दिया है वह भी राम का है और जो ले जायेंगे वह भी राम का है। दिही राम तो रोकही कोन, लेगही राम तो बचाही कौना।[1] अर्थात कह सकते है कि राम हमारे कण-कण में रचे-बसे हुए है। हमारे जीवन के हर कण मे विराजमान है। भगवान राम के व्यक्तित्व में धैर्य, सहन शीलता, क्षमा, करुणा, वात्सल्य, सदचरित्र, सहानुभूति, समानता, कृतज्ञता, नेतृत्व, प्रेम, स्वीकृति आदि अनेक गुणों का समावेश देखने को मिलता है। आधुनिक शिक्षा जगत में इन गुणों का समावेश है भी की नहीं? वर्तमान शिक्षा प्रणाली भगवान राम के गुणों एवं चरित्र को पुस्तकों के माध्यम से वर्तमान पीढ़ियों में संचारित करने को तत्पर है भी कि नहीं? वर्तमान शिक्षा जगत में इन राम गुणों की प्रासंगिकता बची भी है कि नहीं? शिक्षा प्रणाली इन गुणों को जीवन में अमल कराने के लिए प्रतिबद्ध है कि नहीं? – यहीं सब वर्तमान समय के यक्ष प्रश्न है। हम जानते है कि प्रभु राम के एक गुण को जानने एवं लिखने के लिए पूरा जीवन भी अपर्याप्त होगा। फिर भी इस लेख के माध्यम से हम भगवान राम के व्यक्तित्व एवं गुणों पर दृष्टिपात करने के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा जगत में उनकी प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा करने का प्रयास करेंगे, जिन्हें अपनाकर हम कठिनाइयों और संघर्षों के बीच भी अपना जीवन सुख और शांति के साथ बिता सकते हैं।*

**मुख्य शब्द:** राम, व्यक्तित्व, चरित्र, आधुनिक जगत, शिक्षा

## 1. प्रस्तावना

संपूर्ण जगत राम को मर्यादा पुरुषोत्तम (सर्वोच्च पुरुष) के नाम से जानता है। जिन्होंने अपने आचरण और व्यवहार से दुनिया के लिए एक अविस्मरणीय उदाहरण स्थापित किया। उनका आचरण और शब्द अतुलनीय हैं। अगर हम भगवान राम के जीवन के बारे में पढ़ें तो यह ज्ञात होता है कि उनका जीवन शुरू से ही संघर्षमय रहा। अनेक संघर्षों और कठिनाइयों के बीच भी वह अपने आचरण और कर्तव्यों से कभी विचलित नहीं हुए। उन्होंने एक आदर्श राजा, पुत्र, भाई, पिता और मित्र का उदाहरण प्रस्तुत किया। भगवान राम कठिन परिस्थितियों में भी अपने प्रयासों से कभी पीछे नहीं हटे। उनके जीवन का मंत्र था, *"हमारे प्रयास विफल हो सकते हैं, लेकिन हमें अपने प्रयास करने में कभी असफल नहीं होना चाहिए"*।[2एवं3] उनके उत्कृष्ट चरित्र और गुणों के

कारण, रावण जैसे महान पापी ने मरते समय भगवान राम का नाम लिया। भगवान राम को उनके उत्कृष्ट चरित्र के कारण पूरी दुनिया में पूजा जाता है। हर कोई उसके जैसा बेटा, राजा और दोस्त चाहता है। जब भी जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं, राम के भक्त जय श्री राम का नारा लगाकर उन कठिनाइयों का सामना करते हैं।

पूरी दुनिया भगवान राम द्वारा बोले गए शब्दों से प्रभावित है। उनके हर शब्द में ज्ञान का खजाना छिपा है। अगर हम भगवान राम के वचनों का पालन करे तो हमें सफलता के साथ-साथ प्रसिद्धि भी अवश्य प्राप्त होगी। उनका कहना था कि *"अगर कोई आदमी हमेशा खुश रहना चाहता है, तो यह उसका भ्रम है। मानव जीवन में सुख और दुख आते-जाते रहते हैं"।*[4], *"एक आदमी को अपने वादों को पूरा करना चाहिए। उन वादों को पूरा करते हुए एक आदमी मर जाता है, भले ही कोई दु:ख नहीं है।"*[5], *"कोई भी बच्चा कभी भी अपने माता-पिता का कर्ज नहीं चुका सकता। चाहे वह अपने माता-पिता के लिए कितना भी अच्छा क्यों न करे, वह कभी भी अपने कर्ज से मुक्त नहीं हो सकता।"*[6], *"चंद्रमा अपनी महिमा छोड़ सकता है, हिमालय की बर्फ पिघल सकती है, महासागर अपना तट बदल सकता है, लेकिन मैं अपने पिता द्वारा दिए गए वादे का उल्लंघन कभी नहीं कर सकता।"*[6], *"मनुष्य अपने चरित्र से जाना जाता है। उसका चरित्र निर्धारित करता है कि वह सभ्य है या असभ्य, ज्ञानी है या अज्ञानी और निडर है या कायर"।*[6], *"बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा आने वाली समस्याओं का अनुमान लगाता है। इस तरह वह समस्याओं से निपटने की पूरी तैयारी करता है"।*[6], *"जैसे लोग एक जहरीले सांप को मारते हैं, वैसे ही लोगों द्वारा अधर्मी, शातिर और क्रूर पापियों का अंत होता है"।*[7], *"क्रोधित व्यक्ति सोचने की क्षमता खो देता है। वह नहीं जानता कि क्या बोलने योग्य है और क्या नहीं। एक क्रोधी व्यक्ति अपने साथ पूरे समाज को परेशान करता है"।*[7], *"जो व्यक्ति सुख-दुख में समान रहता है, वह वास्तविक मानव है। वह व्यक्ति वास्तविक धार्मिक है जो जानता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है, चाहे वह सुख हो या दुःख"*[7]*।, "समस्याएं हर किसी के जीवन में आती हैं। लेकिन असली योद्धा वह है जो जीत और हार की परवाह किए बिना अपने जीवन का युद्ध लड़ता है"*[7]। *उनके अनुसार विनाश के तीन मुख्य कारण हैं "दूसरों के धन की चोरी", "दूसरों की पत्नी पर बुरी नजर" और "दोस्तों की अखंडता पर संदेह"।* [7]

यदि जीवन में सफल होना चाहते हैं और खुद को सफल बनाना चाहते हैं ताकि जीवन की समस्याएं आपको नकारात्मक दिशा में ना ले जाये, तो हमें भगवान राम के गुणों को अपनाना चाहिए क्योंकि हमें उनके चरित्र से बहुत कुछ सीखने को मिलता है, जैसे नेतृत्व, प्रेम, आंतरिक प्रबंधन, करुणा, स्वीकृति, कृतज्ञता, समानता, धैर्य, आदि। यदि ये सभी गुण हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली पुस्तकों के मध्याम से हमारी वर्तमान पीढ़ी को संचारित कर दे तो ये सभी गुण हमारे भीतर भी आ जाए, हम भी अपने जीवन में इन सभी गुणों का अमल करे तो हमारा जीवन सार्थक सिद्ध होगा और सारी दुनिया हमारे नक्शे कदम पर होगी।

## 2. राम का व्यक्तित्व एवं प्रासंगिकता

*"राम के व्यक्तित्व में अनेक सद्गुणों का समंजस्य मिलता है। उनके जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर उनकी बुद्धिमत्ता के साथ-साथ गुणों से भरा प्रतिबिंब परिलक्षित होता है। उनके प्रत्येक कार्य में जीवन को सार्थकता के साथ जीने का संदेश प्राप्त होता है"।*[7] ऐसे महान व्यक्तित्व के अनगिनत गुणों में से कुछ प्रमुख गुण निम्न प्रकार वर्णित है:

### ✓ सौम्य और संतुलित व्यक्तित्व

प्रभु श्री राम के व्यक्तित्व में शांत, गंभीर व्यक्तित्व का अद्भुत संतुलन मिलता है। स्वामी श्री राम ने कभी अपना संतुलन नहीं खोया। उन्होंने कभी भी किसी भी परिस्थिति को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया बल्कि हर परिस्थिति में दृढ़ता बनाए रखना उनका स्वभाव था। आज के मुश्किल समय में हमें यही सीखना है। अनिश्चित और संशय भरे समय में जब हर कोई टूटा हुआ है, निराशा से भरा हुआ है ऐसी स्थिति में प्रभु श्री राम की कर्तव्य पर डटे रहने की प्रेरणा काम आती है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

✓ **एक आदर्श व्यक्तित्व**

*"भगवान राम को दैवीय शक्ति प्राप्त थी अगर वे चाहते तो एक ही इशारे में कर स्थिति परिवर्तन कर सकते थे, वे चाहते तो खुद को भगवान बात कर बुराइयाँ खत्म करने का अभियान चला सकते थे, लेकिन नहीं; उन्होंने प्रत्येक कार्य एक आम व्यक्ति की भांति किया"।*[8] जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ शिक्षा ग्रहण कर सके। भगवान राम स्वयं उसे रास्ते पर चल जिसे लोग आदर्श मानते हैं।

✓ **समूह को प्रोत्साहित करना**

तमिलनाडु से लंका तक पुल बनाना उस वक्त मानव के बस की बात नहीं थी। हजारों लाखों की संख्या में लोग सेतू बनाते तो उसमें वर्षों लग जाते। लेकिन भगवान राम ने अपनी वानर सेना को इस तरह से प्रोत्साहित किया कि उन्होंने बहुत कम समय में ही इतना लंबा सेतु बना दिया।

✓ **सामाजिक समानता**

भगवान राम राज परिवार से थे सामान्य शब्दों में कहें तो वे अयोध्या नगरी के राजकुमार थे। *"वे चाहते तो केवट व शबरी को बिना गले लगाए भी अपना वनवास व्यतीत कर सकते थे। बल्कि उन्होंने ना मात्र केवट की नाव पर चरण पखार किये बल्कि शबरी के झूठे बेर भी खाए"।*[9] उन्होंने सामाजिक समानता के लिए शबरी और केवट को गले लगाया ऐसा करने से उनके साथ लोगों में समानता का भाव उत्पन्न हुआ।

✓ **शांति से लक्ष्य की ओर अग्रसर होना**

पिता की आज्ञा मान भगवान राम 14 वर्ष तक वनवास में रहे। जिसमें से 12 साल उन्होंने चित्रकूट में ही बिता दिए जब उन्हें आभास होने लगा कि वन के समस्त व्यक्ति उन्हें पहचानने लगे हैं, जिससे उनके उद्देश्य में व्यवधान पड़ सकता है, तब वह वन से अगले पड़ाव की तरफ आगे बढ़े, क्योंकि राम को ना तो आत्म प्रचार पसंद था और ना ही वे लक्ष्य से भटकना चाहते थे।

✓ **विरोधी के गुणों से सीखना और महत्व प्रदान करना**

लोक कथाओं से ज्ञात होता है कि कैसे प्रभु श्री राम ने अपने विरोधी या शत्रु से भी शिक्षा ग्रहण करने को जीवन में प्राथमिकता दी। रावण उनका शत्रु था लेकिन राम ने अपने अनुज लक्ष्मण को इस बात के लिए प्रेरित किया कि अवश्य रावण हमारा शत्रु है लेकिन उस पर देवी सरस्वती की कृपा है, वह ज्ञानी है इसलिए हमें उससे सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। यह प्रभु श्री राम के विराट व्यक्तित्व का उदाहरण है जो जीवन के प्रति संकल्प और सत्य के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। वह ना तो कभी अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित हुए और ना ही कभी अपने साथ के लोगों को विचलित होने दिया।

✓ **नकारात्मकता से मुक्त मन**

रामचरितमानस का एक प्रचलित दोहा है जो श्री राम के व्यक्तित्व की विराटता का प्रतीक है। *"पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ, सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ"*।[10] यानी प्रभु श्री राम की कृपा चाहिए तो अपने मन को नकारात्मक भावों से मुक्त करना होगा। छल कपट से उसे खाली कर प्रेम-भाव से भरकर ही हम श्री राम के समीप पहुंच सकते हैं।

✓ **न्याय के लिए कानून का पालन आवश्यक**

यह एक बड़ा विरोधाभास है अजीब है कि जो हमारे जन-जन के नायक हैं। जिन प्रभु श्री राम को अपनी सांसों में बसाया है। जिनके प्रति अघूड आस्था है। जिनकी हम नित्य पूजा करते हैं। हम उस अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व से मिली सीख को अपने व्यक्तित्व में नहीं उतार पाए। प्रभु श्री राम ने तो न्याय के लिए बड़े से बड़ा त्याग किया, अपनी-परायी किसी चीज की परवाह नहीं की। न्याय के लिए नियमों को सर्वोपरि रखा और मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए।

✓ **संयम की पराकाष्ठा**

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

लंका नरेश रावण द्वारा माता सीता के हरण ने श्री राम के समक्ष एक चुनौती उत्पन्न कर दी। मार्ग में जो सबसे बड़ी बाधा थी, वह समुद्र था। इसको पार करने की चुनौती सबको परेशान कर रही थी। लक्ष्मण यह चाहते थे कि समुद्र सुखाकर आगे बढ़ा जाए लेकिन प्रभु श्री राम को यह स्वीकार नहीं था। उन्होंने समुद्र से मार्ग दिखाने के लिए विनम्र प्रार्थना की और अंततः समुद्र ने मार्ग बताया। जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आती रहती हैं, प्रभु की तरह यदि हम संयम से आगे बढ़े तो आगे की राह जरूर मिल जायेगी।

✓ **प्रबंधन में कुशल**

*"राम ना केवल कुशल प्रबन्धक थे, बल्कि सभी को साथ लेकर चलने वाले थे"।*[11] वे सभी को विकास का अवसर देते थे और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करते थे। उनके इसी गुण की वजह से लंका जाने के लिए उन्होनें और उनकी सेना ने पत्थरों का सेतु बना लिया था।

## 3. राम के चरित्र की विशेषताएं

निम्न प्रमुख विशेषताओं के आधार पर भगवान राम के चरित्र को परिलक्षित किया जा सकता है:

- सहनशील और धैर्यवान होना भगवान राम का प्रमुख गुण है।
- अयोध्या का राजा होते हुए भी भगवान श्री राम ने सन्यासी सा जीवन व्यतीत किया।
- विपरीत परिस्थितियों में भी भगवान राम ने दयालुता का भाव बनाए रखा।
- भगवान राम ने मित्रता करते समय किसी जाति या धर्म का भेदभाव नहीं अपनाया।
- राम के नेतृत्व क्षमता अद्भुत थी उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक जीव जीव का नेतृत्व
- उसकी योग्यता क्षमता के अनुसार किया और लंका पर विजय प्राप्त की।
- इसके अतिरिक्त भगवान राम मातृ पितृ भक्त साहसी पराक्रमी त्यागी और उदार व्यक्तित्व से समृद्ध थे।

अत: *"चरित्र, संस्कार और आत्मअनुशासन ही वास्तविक शिक्षा का आधार हैं"*।[12]

## 4. राम का व्यक्तित्व एवं आधुनिक शिक्षा जगत

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व की आधुनिक शिक्षा जगत में प्रासंगिकता को निम्न बिन्दुओं द्वारा वर्णित किया जा सकता है:

### 4.1. शिक्षा के मानदंड

✓ शिक्षा वह है जो व्यक्ति को उसकी संस्कृति और संस्कारों से जोड़ें।

✓ जिसका आधार स्वयं की योग्यता क्षमता पर विश्वास रखता हो।

✓ शिक्षा जीवन के मूल्य एवं आदर्शों पर आधारित होनी चाहिए।

✓ शिक्षा जनतांत्रिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ बालक में दृढ़ चरित्र का निर्माण करने वाली होनी चाहिए।

✓ शिक्षा कौशल नागरिकता का प्रशिक्षण प्रदान करने वाली हो।

### 4.2. शिक्षा के उद्देश्य

- शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य बालक को चरित्रवान और संस्कारवान बनाना है।
- शिक्षा के माध्यम से बालक में सद्गुणों का विकास करना परम आवश्यक है।
- शिक्षा में सिद्धांतों का निर्माण करना और उससे भी अधिक ध्यान उसके व्यावहारिक पक्ष पर देना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

- शिक्षा शाश्वत जीवन मूल्यों और आदर्श का विकास करने वाली होनी चाहिए।

### 4.3. शिक्षण विधि

राम के व्यक्तित्व से हमें शिक्षा ही नहीं बोलने के तरीकों पर भी बहुत कुछ सीखने को मिला है। भगवान राम ने कभी भी किसी को क्रोध में आकर या आवेश में आकर अपशब्द नहीं कहे। स्वयं करके सीखना स्व अनुभव द्वारा सीखना अथवा स्वाध्ययन को जीवन में महत्व देना जैसी शिक्षण विधियां राम के व्यक्तित्व में देखने को मिलती है। कुशल संप्रेषण कौशल का जीवंत उदाहरण है श्री राम का व्यक्तित्व अतः संवाद विधि प्रश्न उत्तर विधि व्याख्यान विधि आदि महत्वपूर्ण है।

### 4.4. पाठ्यक्रम

शिक्षा का पाठ्यक्रम सैद्धांतिक के साथ-साथ कौशल पर आधारित होना चाहिए अर्थात व्यावहारिक होना चाहिए। श्री राम ने वन गमन के समय प्रत्येक प्राणी को कौशल विकास का पाठ पढ़ाया। सामाजिक समानता सदाचारी धर्म नीति तथा व्यावसायिक विषयों को शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए ऐसा श्री राम के व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है।

### 4.5. अनुशासन

राम का व्यक्तित्व स्व–अनुशासन से ओतप्रोत है। आंतरिक अनुशासन को राम ने जीवन में महत्व दिया इसके अतिरिक्त एक मर्यादा पूर्ण जीवन व्यतीत किया जो आज भी प्रत्येक बालक के लिए अनुकरणीय है।

### 4.6. वर्तमान शिक्षा प्रणाली

भगवान श्री राम के रूप में हमारे पास मानवता का सर्वोच्च आदर्श है। अनेक संकट है, हर दिन एक नई और जटिल परीक्षा है, जब ऐसी घड़ी आती है तो भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च नायक और जन-जन के आदर्श प्रभु श्री राम सहज याद आते हैं। तुलसीदास जी के शब्दों में *अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में विहरे*।

राम कथा में प्रभु को प्रत्येक संकट की घड़ी में संयमी और संकल्पवान दर्शाया गया है। जिससे वे संकट को दूर करने में सक्षम हो पाते हैं। दुनिया में कहीं भी चले जाएं, प्रभु श्री राम की बात आते ही उनके नाम के साथ जो दूसरी बात प्रत्येक हृदय में आती है- वह है राम राज्य।

## निष्कर्ष

प्रभु श्री राम ने अपने जीवन को व्यक्तिगत ना रखकर, सामाजिक आदर्श की स्थापना की। श्री राम केवल परिवार व समाज नहीं बल्कि संपूर्ण जीव और परिवेश की बेहतरी के लिए कर्तव्य परायणता की आदर्श प्रतिमूर्ति थे। विपरीत परिस्थिति में भी स्वयं को उन्होंने कर्म पथ पर एकाग्र और संयमित रखा। श्री राम ने उतार-चढ़ाव को जीवन का अंग माना। दुख किसने नहीं सहा और किसे नहीं होगा पर यदि संकल्प मजबूत रहे और संकट काल में संयम बनाए रखें तो बड़े से बड़े तूफान, झंझावातों का सामना सहजता से किया जा सकता है। श्री राम के शब्दों में- "*सुख-दुख तो जीवन में सीख देने आते हैं*"[13] और अगर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रभु राम के गुणों को समावेशित कर, वर्तमान पीढ़ी को उन्हें जीवन में अमल करने के लिए प्रोत्साहित करें तो निश्चित रूप से हमारे जीवन की सार्थकता निश्चित रूप से सिद्ध होगी।

## संदर्भ सूची

1. शुक्ल, आर० (2005). तुलसीदास, गोस्वामी (1600), कवितावली, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी (संशोधित संस्करण 2005)।
2. त्रिगुणायत, जी० (1988). कबीर ग्रंथावली सटीक: अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
3. सिंह, जे० (1983). कबीर वाणी पीयूष: विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

4. अग्रवाल (1997). डॉ. सालिक राम संत कबीर और कबीर पंथ: प्रकाशक ओम प्रकाशन रायपुर (छत्तीसगढ़) ।

5. चतुर्वेदी, आर० (2001). कबीर (आलोचनात्मक अध्ययन) प्रकाशन केन्द्र लखनऊ।

6. दास, डी० (1997). कबीर के ज्वलंत रुप: पारख प्रकाशक कबीर संस्थान, प्रीतम नगर, इलाहाबाद।

7. तिवारी, वी० के० (1998). भारत की जनजातियां: हिमालय पब्लिकेशन हाउस, मुम्बई, नई दिल्ली, नागपुर।

8. गोस्वामी, बी० (2000). सुनो भाई साधो: (श्रीगृन्ध मुनि नाम साहेब का प्रवचन संग्रह): संकलन दामाखेड़ा, रायपुर (छ.ग.)।

9. दास, एम० (2000). भजन मुक्तावली संकलन: कबीर कीर्ति मंदिर: वाराणसी।

10. तुलसीदास (1575). रामचरितमानस. काशी: गंगा पुस्तक माला।

11. वेरियर, ए० (1991). मिथ्स आॅफ मिडिल इंडियन: पुर्नमुद्रण वन्या प्रकाशन: भोपाल।

12. सूरती, यू० (1980). कबीर जीवन और दर्शन: लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

13. तुलसीदास (1575/ समकालीन व्याख्या). *रामचरितमानस* (भावार्थ व्याख्या सहित). गीताप्रेस: गोरखपुर।

***Cite this Article:***

**प्रो० छत्रसाल सिंह,“ मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व की आधुनिक शिक्षा जगत में प्रासंगिकता”** *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.142-147, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

## प्रो० छत्रसाल सिंह

**For publication of research paper title**

## मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व की आधुनिक शिक्षा जगत में प्रासंगिकता

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/